उपजाऊ, रेतीली–दोमट तथा चिकनी मिट्टी उपयुक्त होती हैं। शुष्क क्षेत्रों में इसकी खेती के लिए नियमित सिंचाई की सुविधा आवश्यक है।

कृषि तकनीक

मण्डूकपर्णी के जड़ युक्त तनों का रोपण किया जाता है। इसके लिये पहले पौधशाला में बीज से रोपण सामग्री तैयार कर लेनी चाहिए। खेत में भूमि को गहरी जुताई करके तैयार किया जाता हैं। उसी समय मिट्टी मे 20 टन प्रति हेक्टेयर गोबर खाद अथवा कम्पोस्ट मिला देना चाहिए। खेत में उचित जल निकासी वाली क्यारियाँ बना कर उनमें फरवरी – मार्च में 45 से.मी. X 45 से.मी. अंतराल पर रोपण किया जा सकता है। एक हेक्टेयर के लिये 300 ग्राम जड़युक्त तने की आवश्यकता होती है। शुष्क माहों के दौरान सिंचाई आवश्यक है। वहीं वर्षाकाल में उचित जल निकासी भी आवश्यक है, ताकि पौधे पानी के भराव से सड़ न जायें। फसल की निरंतर निंदाई – गुड़ाई भी आवश्यक है।

फसल विदोहन एवं विदोहनोत्तर प्रबंधन

रोपण के लगभग 3 माह पश्चात फसल परिपक्व हो जाती है। परिपक्व होने पर हाथ से पत्तियों को तोड़ लिया जाता है। तोड़ने के पश्चात पत्तियों को छायादार स्थान पर सुखाना चाहिए।

उपज

एक वर्ष में इसकी पत्तियों की तीन बार तुड़ाई की जा सकती है जिससे प्रति हेक्टेयर प्रतिवर्ष 10 से 12 टन उपज प्राप्त हो सकती है।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई-चरक (ई-मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले-स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर-482008 (म.प्र.)

संपर्क : 0761-2665540, 9300481678, 9724658622, फैक्स : 0761-2661304

ई-मेल : rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेब : http://www.rcfccentral.org

Amrit # 8349634350

मण्डूकपर्णी

(*Centella asiatica* Syn. *Hydrocotyle asiatica*)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2020

मण्डूकपर्णी

(*Centella asiatica* Syn. *Hydrocotyle asiatica*)

कुल	: Apiaceae (Umbelliferae)	
आयुर्वेदिक नाम	: मण्डूकपर्णी	
हिन्दी नाम	: ब्राम्ही, जलब्राम्ही	
अंग्रेजी नाम	: Indian pennywort, Asian pennywort, Tiger grass	
अन्य प्रचलित नाम	: Gotukola	
उपयोगी भाग	: मुख्यतः पत्तियाँ, पंचांग	

रासायनिक संरचना

मण्डूकपर्णी मे कई प्रकार के पेण्टासाइक्लिक ट्राईटर्पेनॉइड्स (सेपोनिन्स), यथा – एसियाटिकोसाइड (asiaticoside), ब्राम्होसाइड (brahmoside), सेन्टिलोसाइड (centilloside), मेडिकासोसाइड (madecassoside) पाये जाते है। इनके अलावा इस पौधे मे एसियूएटिक एसिड (asiuyatic acid) तथा ब्राम्हिक एसिड (bramhic acid) भी पाये जाते है, जो कि इसके औषधीय गुणों के कारक है।

औषधीय गुण

इस पौधे मे अनुभूति तथा स्मरण शक्ति वर्धक एवं रक्त शोधक तथा रक्तचाप नियंत्रक गुण पाये जाते है। यह मस्तिष्क की तंत्रिकाओं तथा कोशिकाओं को मजबूती प्रदान करता है एवं मस्तिष्क को शांत करता है। इसके अलावा इसमें ज्वर निवारक, मूत्रवर्धक, आमवाती, जीवाणुरोधी, विषाणुरोधी तथा कैंसररोधी गुण भी पाये जाते हैं।

औषधीय उपयोग

आयुर्वेद तथा चीनी चिकित्सा प्रणालियों मे ब्राम्ही (मण्डूकपर्णी) का अनेक रोगों तथा व्याधियों के उपचार मे प्राचीन काल से उपयोग होता रहा है। मानसिक रोगों जैसेः– अलजाइमर (Alzheimer's disease), उन्माद (hysteria), अवसाद (depression), दुश्चिन्ता (anxiety) तथा अन्य भावनात्मक विकारों के उपचार में एवं स्मरण शक्ति बढ़ाने वाली औषधियों को तैयार करने में व्यापक रूप से इसका उपयोग किया जाता है। चर्मरोगों, जैसेः– कुष्ठ (leprosy), छाजन (eczema), खुजली (itching), सोरायसिस (psoriasis) तथा त्वग्काठिन्य (scleroderma) की औषधियों के निर्माण में भी इसका उपयोग होता है। ऑटोइम्यून रोग सिस्टमिक ल्यूपस एरिथेमेटोसस के उपचार मे भी यह बहुत गुणकारी सिद्ध हुई है। कई यौन संक्रमित रोगो जैसे उपदंश (syphilis) तथा स्त्रियों के अनियमित मासिक धर्म संबंधी व्याधियो जैसे एमेनोरिया (amenorrhoea) के उपचार मे भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसकी पत्तियों को पीस कर लेप लगाने से छोटे–मोटे घाव जल्दी भर जाते है। क्षयरोग (tuberculosis), अमीविक पेचिश (amoebic dysentery), अतिसार (diarrhoea), जुकाम (common cold), कीटदंश (insect bite) तथा व्रण (ulcer) के उपचार मे भी इसका उपयोग किया जाता है।

वितरण

यह पौधा भारतीय उपमहाद्वीप, दक्षिण–पूर्व एशिया, मैडागास्कर, दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी यूरोप, दक्षिण प्रशांत क्षेत्र के देशों, संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण पूर्वी राज्यों तथा उष्णकटिबंधीय ओसीनिया में पाया जाता है। यह प्रकृति से जलीय (aquatic) पौधा है तथा आर्द्र स्थानों (wetlands) मे अधिक पाया जाता है। भारत में यह समुद्र तल से 1800 मीटर ऊँचाई तक दलदली तथा आर्द्र स्थानो पर प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। कई स्थानो पर इसकी खेती भी की जा रही है।

आकारिकी

यह एक बहुवर्षीय हर्बेसियस क्रीपर (herbaceous creeper) पौधा है। इसका तना पतला, जमीन पर फैलने वाला, हरा अथवा लालिमायुक्त हरे रंग का होता है। इसके पत्ते कुछ मांसल, छत्राकार तथा किनारों पर दांतेदार होते हैं। पत्तियों का व्यास लगभग एक इंच (2.5 से.मी.) तक होता है। फूल सफेद, हल्के बैगनी या गुलाबी रंग के होते हैं। फल छोटे, अंडाकार, भूरे रंग के, संकुचित तथा मोटे होते है एवं छोटे गोल गुच्छों में लगते है।

मृदा एवं जलवायु

यह पौधा पाले (frost) तथा मृदा मे जैविक तथा रासायनिक प्रदूषको की उपस्थिति के प्रति बहुत संवेदनशील है। इसकी खेती के लिए नमीयुक्त,